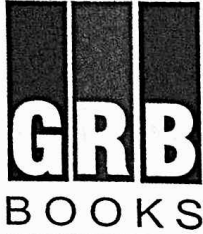


Dr. Vandana Suman
 Associate Professor
 Dept. of Philosophy
 H. D. Jain College, Ara
 B.A. Part - II (Hons)
 Paper - IV
 पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
 (Western Philosophy)



1 Berkeley: "Subjective Idealism"
 (बर्केली: आत्मनिष्ठ Notes)
 प्रत्ययवाद)

अनुभववादी दार्शनिक थे। किन्तु लॉक का
 सन्प्रयानुभववाद बर्केली के दर्शन में
 विज्ञानानुभववाद बन गया है। बर्केली का
 मुख्य उद्देश्य अज्ञात का खण्डन और
 विज्ञानवाद का खण्डन करना था।

बर्केली के अनुसार अनुभव
 ही ज्ञान का एकमात्र साधन है और
 अनुभव में सिर्फ प्रत्ययों का होना
 है। इसलिए प्रत्यय ही वास्तविक हैं।
 इनमें मिला कोई वास्तविक नहीं
 है। विश्व के सभी पदार्थ अनुभवों या
 प्रत्ययों का समूह है और अनुभवों
 या प्रत्ययों का अस्तित्व अनुभवकर्ता
 पर आश्रित है। इस तथ्य को बर्केली
 ने अपनी प्रसिद्ध उक्ति *esse est percipi*

percipi द्वारा व्यक्त किया है।
 जिसका अर्थ होता है कि विश्व के
 सभी पदार्थ अपने अस्तित्व के
 लिए किसी अनुभवकर्ता पर निर्भर
 करते हैं।

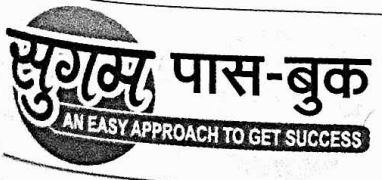
बर्केली का कहना है
 कि कोई भी पदार्थ अनुभव से परे नहीं
 होता और अनुभव सिर्फ गुणों का
 समूह है। वास्तविकता किसी
 गुणात्मक प्रत्यय या आश्रय का
 नहीं है। इसलिए सभी पदार्थ
 गुणों के समूह मात्र हैं। किसी भी
 पदार्थ में गुणों के
 अतिरिक्त हम कुछ भी
 नहीं पाते।
 जैसे -



Notes

मान लें कि एक पुष्प है तो पुष्प कहने से हमें पुष्प का अनुभव नहीं होता बल्कि इसके गुणों जैसे सुगंध रंग चिकनाहट आदि का ही अनुभव होता है। पुष्प अपने आप में कोई भी पदार्थ नहीं है वह सिर्फ गुणों का संकलन है। किन्तु गुण वस्तुनिष्ठ मन के बाहर या मन से स्वतन्त्र नहीं बल्कि आत्मनिष्ठ, आत्मा के अनुभव पर आश्रित अर्थात् मन के प्रत्यय हैं। चिन्ता में चरने के अनुभव परमीठापन क्षुब्ध पर दुःखलापन तथा धुने पर करवापन निर्भर है। इन अनुभवों में अलग-अलग कारक उनका कोई अर्थ नहीं होता है। इस प्रकार सभी गुण आत्मा पर आश्रित या प्रत्यय हैं।

परन्तु प्रत्यय निष्क्रिय हैं और इसलिए हमें वांछित प्रत्ययों को धोड़कर कुछ और सत्ता है जो प्रत्यय प्राप्त करता है पर जो स्वयं प्रत्यय नहीं है। यह है आत्मा। वस्तुओं की सत्ता उनके समबन्ध के प्रत्ययों में निहित है; पर आत्मा की सत्ता परिधि में न होकर परिधि-रूप क्रिया पर परिधि में है। अर्थात् आत्मा की सत्ता इसकी सक्रियता में है। अर्थात् आत्मा की सत्ता इसकी सक्रियता में है। बर्कल का कहना है कि आत्मा ही एक पदार्थ है और प्रत्यय, इसपर निर्भर करते हैं। इसलिए आत्मा और



आत्मिक प्रत्यय के अतिरिक्त किसी अन्य चीजों की सत्ता नहीं है। इसलिये अकल के कर्षण को आध्यात्मिक वाक्य कहते हैं।

अकल को आत्मनिष्ठ प्रत्ययवादी भी कहा जाता है। अकल अपने जीवन के पूर्व में आत्मनिष्ठ प्रत्ययवादी थे लेकिन अतृप्त में आकर वे अस्तनिष्ठ प्रत्ययवादी बन जाते हैं। अकल के अनुसार आत्मनिष्ठ प्रत्ययवादी

(Subjective Idealism) वह तत्व वास्तविक सिद्धांत है जो सही आत्मनिष्ठ तथा उनके प्रत्यय को परमार्थ मानता है

अकल पर या उनसे अकल का वास्तविकता नहीं है। इस आत्मनिष्ठ इसलिये कहा गया कि यह अस्तनिष्ठ आत्मा का विश्वास नहीं करे।

इस विचारों का अतिरिक्त विचार करनेवाले पर निर्भर है और विचार करनेवाला आत्मा होता है अतः

सबूचा असार आत्मा पर निर्भर है

आत्मा का प्रत्यय हमें नहीं मिलता

लेकिन अकल ज्ञान एक विशेष प्रकार के अनुभव द्वारा होता है जैसे

अकल अतिरिक्त अनुभव या अनुभव कहते हैं। यह किसी प्रकार का अनुभव नहीं है। अतः आत्मा को अकल

चैतन्य, अनुभव का अधिष्ठान और

प्रत्ययों को आश्रय या आधार मानते हैं। अतः वे आध्यात्मिक प्रत्यय भी कहते हैं।

इस प्रकार आत्मा प्रत्यय या प्रत्ययों का संघात

Notes

नदी बालक के लिये आश्रयमूल प्रत्यक्ष है किन्तु बिना प्रत्यक्ष की कल्पना नहीं की जा सकती। अतः आत्मनिष्ठ प्रत्यक्षवादी बर्कले का निष्कर्ष है कि केवल हमारे आत्मा और उनके प्रत्यक्ष परमात्मा के द्वारा प्राप्त पाकेत

आत्मनिष्ठ प्रत्यक्षवादी का प्रभाव बड़ा क्रांतिकारी सिद्ध हुआ साधारण जनता तथा कश्मीर के आदिवासी विद्वानों ने इसका तीव्र विरोध किया क्योंकि सारे संसार का प्रत्यक्षों का समूह मानने से बड़ी काठनाई होती है। अनेक

(1) बर्कले सम्पूर्ण विश्व को प्रत्यक्षों का समूह मानते हैं किन्तु यहाँ पर प्रश्न उठता है कि जब सब कुछ प्रत्यक्षों के तब ही हमलोग प्रत्यक्ष होते हैं, प्रत्यक्ष ही प्रत्यक्ष पहनते हैं। यह बहुत बड़े-बड़े सा लगता है।

(2) बर्कले सभी पदार्थों को आत्मों पर आश्रित मानते हैं किन्तु सभी पदार्थों को समस्त आत्मों पर मानना अचित नहीं है। अतः मान लिया जाय कि वे रेखा की लाइन पर खड़ी हैं। और कस रही है कि सामने ही तब रेखा गाड़ी आ रही है। बर्कले के अनुसार यह प्रत्यक्षों का समूह है और अनुभव पर आश्रित ताक्या गैरी अखि बन्द्य हा जाने पर अनुभव

BOOKS के अभाव में इसकी सतह मीट जागगी ? इसका उत्तर बकले आल्मनिष्ठ प्रत्ययवाद का आधार पर नहीं है पात है।

प्रत्ययवाद एक दोषपूर्ण सिद्धांत है। बकले ने स्वयं भी आगे चलकर अपने मत की फलताओं को महसूस किया है। इसलिये अपने कार्यात्मिक जीवन के उत्तर में वे इन दोषों से बचने के लिए कुछ भी मानते हैं और वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवादी बन जाते हैं।

यदि बकले अन्ततः आल्मनिष्ठ प्रत्ययवाद का समर्थन नहीं करते हैं, इसलिये अन्ततः ही हम आल्मनिष्ठ प्रत्ययवादी नहीं कह सकते हैं।